Sl.No. :

नामांक Roll No.

यहाँ से काटिए

No. of Sections – 3

No. of Printed Pages – 07

SS–32–SH. HD. (Hindi)

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2016

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2016

हिन्दी शीघ्रलिपि

(SHORTHAND HINDI)

समय : 3¼ **घण्टे**

पूर्णांक : 40

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।

2) तीनों खण्ड एक ही बैठक में लिखाये जायें ।

3) प्रथम एवं द्वितीय खण्डों तथा द्वितीय एवं तृतीय खण्डों के बीच में 5-5 मिनट का मध्यान्तर दिया जाये । तीनों खण्डों के संकेत लिपि श्रुतलेखों के हिन्दी अक्षरीकरण के लिए 2¾ घंटे का समय दिया जाए ।

4) केवल निम्न विराम–चिह्न ही लगाएं :

पूर्ण विराम, अर्द्ध–विराम और प्रश्न–चिह्न एवं कोष्ठक ।

5) संकेत लिपि पेन्सिल से लिखा जाए तथा उसका अनुवाद हिन्दी में टंकण यंत्र / कम्प्यूटर से ही टंकित किया जाय । हाथ से लिखा मान्य नहीं होगा ।

6) संकेत लिपि में लिखा हुआ श्रुतलेख उत्तर–पुस्तिका के साथ नत्थी कर दिया जाए ।

7) संकेत लिपि के 20% अंक रखे गये हैं ।

8) खण्ड प्रथम 4 मिनट, खण्ड द्वितीय 5 मिनट तथा खण्ड तृतीय 7 मिनट लिखवाने के रखे गए हैं । प्रत्येक खण्ड 80 शब्द प्रति मिनट की गति से बोला जाय ।

यहाँ से काटिए

प्रथम खण्ड [10]

(इसे 80 शब्द प्रति मिनट की गति से लिखा जाए)

रामदास एण्ड फतेहचन्द कम्पनी

क्रॉकरी के विक्रेता

तार का पता : 'राम' 28, गांधी मार्ग,

टेलीफोन नं/ : 2727632 क्नॉट प्लेस, [¼]

कोड नं. : आर. ए. एफ. सूरत ।

पत्र क्रमांक : 7361/ / 454 [½]

दिनांक : 15 फरवरी, 2016

सर्व श्री अरविन्द गुड्स सर्विसेज,

गोविन्द पन्त मार्ग,

बड़ोदा ।

विषय /: माल की क्षतिपूर्ति हेतु । [¾]

प्रिय महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित 2 जनवरी, 2016 का माल हमें प्राप्त // हुआ । हमें खेद के साथ लिखना पड़ रहा [1]
है कि जब हमने पेटियां खोलीं तो बहुत सारा माल टूटा / हुआ मिला । टूटे हुए सामान का विस्तृत विवरण [1¼]
हमने ट्रांसपोर्ट कम्पनी को बता दिया था । क्षतिग्रस्त माल की / सम्पूर्ण सूचना आपको भी भिजवा दी [1½]
थी । अपनी व्यापारिक शर्तों के अनुसार 10% हर्जाने के साथ टूटे हुए / माल की क्षतिपूर्ति हेतु निवेदन [1¾]
किया था ।

किन्तु आपके द्वारा अभी तक कोई प्रत्युत्तर प्राप्त नहीं हुआ है । // हमने माल की आपूर्ति के साथ [2]

क्षतिपूर्ति के शीघ्र भुगतान का भी आग्रह किया था । ताकि भविष्य में अपने / व्यापारिक संबंध मधुर [2¼]

बने रहें । आपकी उदासीनता से ऐसा प्रतीत होता है कि आप 10% हर्जाने के साथ / माल की आपूर्ति [2½]

नहीं करना चाहते हैं ।

त्योहारी मांग को देखते हुए हमें व्यापार में काफी नुकसान उठाना पड़ / रहा है । ग्राहकों की मांग [2¾]

के अनुसार हमें अन्यत्र स्थान से ज्यादा कीमतों पर माल मंगाना पड़ा है // [3]

अतः हमें दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि आप या तो आने वाले 15 दिनों में माल की / [3¼]

आपूर्ति 10% हर्जाने के साथ कर दें अन्यथा मजबूर होकर हमें कानूनी कार्यवाही करना पड़ेगी । आपकी

सुविधा के / लिये क्षतिग्रस्त माल की एक कॉपी पुनः प्रेषित कर रहे हैं । [3½]

संलग्न : क्षतिग्रस्त माल भवदीय,

की / प्रतिलिपि रामदास एण्ड फतेहचन्द [3¾]

तथा ट्रांसपोर्ट कम्पनी कम्पनी के लिये,

की रिपोर्ट एवम्

बीजक की प्रति हस्ताक्षर

रामदास

साझेदार // [4]

द्वितीय खण्ड [10]

(इसे प्रति मिनट 80 शब्दों की गति से लिखा जाए)

क्रमांक : 222 दिनांक : 3 मार्च, 2016

अधीक्षण अभियन्ता,

जल संसाधन वृत,

इन्दौर ।

प्रसंग : / आपका पत्रांक लेखा 735 दिनांक 10.01.2016 [¼]

महोदय,

उपरोक्त प्रासंगिक पत्र के सन्दर्भ में निवेदन है / कि आपके द्वारा प्रदत्त कार्य की निविदाएं [½]
स्वीकृति पश्चात् एवम् निर्देशानुसार मैसर्स राजधानी कॉन्ट्रेक्टर, पुरानी चुंगी के पीछे जेबी / रोड, [¾]
भोपाल को कार्य आदेश जारी किये गये । कार्य आदेशानुसार 10.10.2015 को प्रारम्भ कर // [1]
10.02.2016 को पूर्ण किया जाना था । संवेदक द्वारा कार्य की स्पान वाईज प्रगति रखी गई / थी । [1¼]

निर्देशानुसार है कि उक्त कार्य अलग प्रवृत्ति का है जिसमें विभाग एवं संवेदक को राजस्व विभाग
के पटवारियों / पर निर्भर रहना होता है । मुटाम लगाने के लिये चिन्हीकरण हल्का पटवारियों द्वारा ही [1½]
दिया जाता है । उक्त / कार्य कर विभाग द्वारा समय – समय पर निवेदन करने के फलस्वरूप सम्बन्धित [1¾]
हल्का पटवारियों द्वारा सहयोग प्रदान करने हेतु मुटाम // लगाने हेतु स्थान चिन्हीकरण में यथासम्भव [2]
सहयोग दिया जाता रहा है, जिसके फलस्वरूप संवेदक ने कार्य आदेश राशि रूपये / 46, 28, 215 के [2¼]
विरूद्ध राशि रूपये 32,75,419 /– का कार्य सम्पादित कर लिया / था तथा कार्य की प्रगति के अनुसार [2½]
कार्य निर्धारित समय तक पूर्ण हो जाना था, परन्तु अचानक मौसम परिवर्तन / के कारण सम्बन्धित क्षेत्र [2¾]

व पूरे राज्य में आंधी, वर्षा एवं ओलावृष्टि के कारण किसानों की फसलों को भारी // नुकसान होने के [3]
कारण राज्य सरकार ने सभी पटवारियों को किसानों को हुए नुकसान के आंकलन में नियुक्त कर तुरन्त / [3¼]
रिपोर्ट देने के निर्देश देने के कारण मुटाम लगाने का कार्य प्रभावित हुआ एवं सम्बन्धित हल्का पटवारी
फसलों के नुकसान / के आंकलन में व्यस्त हो गये हैं। इस कारण संवेदन को उसके द्वारा तैयार मुटामों [3½]
को लगाने हेतु चिन्हित / स्थान यथा समय उपलब्ध नहीं हो सकें। इस कारण कार्य प्रभावित हुआ है। [3¾]

निवेदन है कि चूंकि कार्य // की भौतिक प्रगति अनुसार लगभग 90 प्रतिशत तक कार्य पूर्ण हो [4]
चुका है तथा शेष कार्य दिनांक 25.03/. 2016 तक पूर्ण कर लिये जाने की पूर्ण संभावना है। अतः [4¼]
श्रीमान् से इस कार्यालय के पत्रांक / 203 द्वारा अनुरोध किया गया था कि कार्य पूर्ण करने एवं अनुबंध [4½]
को जीवित रखने हेतु कार्य की समयावधि 25 /. 03. 2016 तक बढ़ाने की अनुशंसा की गई थी। [4¾]

भवदीय

अधिशाषी अभियन्ता

जल संसाधन खण्ड,

इन्दौर// [5]

तृतीय खण्ड [20]

(इसे 80 शब्द प्रति मिनट की गति से लिखा जाए)

स्वतंत्रता संग्राम की अमरनायिका
रानी अवंति बाई

भारतीय नारियों ने इस पुरूष प्रधान समाज में अपना एक अलग मुकाम बनाया /। देश का स्वर्णिम [¼]
इतिहास भी महिलाओं की शौर्य गाथाओं से भरा पड़ा है, चाहे वे दुर्गावती, लक्ष्मीबाई /, झलकारीबाई, [½]
अजीजन बी या कल्पनादत्ता ही क्यों न हों? इनमें तो बहुत सी महिलाओं को हम जानते / भी नहीं जो आज [¾]
भी गुमनामी के अंधेरे में खोई हुई हैं।

अवन्तीबाई का शौर्य पराक्रम अपने आप // में अद्वितीय है । भारत की माटी में पलकर बड़ी होने [1]
वाली यह सिंहनी गुलामी की निराशा के तिमिर में / एक ज्वाला थी । अवन्तीबाई ऐसा नाम है जिससे [1¼]
अंग्रेजी सेनापति वालिंगटन और उसकी सेना ठीक ऐसे कांपती थी / जैसे शेरनी के आगे हिरण । वीरता [1½]
और त्याग की पर्याय इस देवी का जन्म 16 अगस्त सन् 1831 शिवनी / जिले के मनकेड़ी नामक [1¾]
ग्रामीण राज्य में हुआ था । माता का नाम कृष्णा बाई और पिता का नाम जुझारूसिंह // मनकेड़ी के [2]
राजा थे । इस चन्द्रमुखी बेटी को पाकर वे धन्य हो गये । बचपन में इस बालिका ने / अपने पिता को [2¼]
वचन दिया था कि वह अपना नाम बेटों की तरह रोशन करेगी । तलवारों की झनझनाहट और / घोड़ों की [2½]
हिनहिनाहट, परिवार के संस्कारों, बंदूक को गोलियों बारूद की गंध तथा बलिदान, शान और पराक्रम/ [2¾]
के परिवेश में पली बढ़ी यह बालिका आज़ादी की पहली लड़ाई में अमर नायिका बन गई ।

अवन्ती बाई का // विवाह रामगढ़ के राजा लक्ष्मणसिंह के पुत्र विक्रमादित्य के साथ सम्पन्न [3]
हुआ । सन् 1851 में पिता राजसिंह की मृत्यु / के बाद विक्रमादित्य सिंहासन पर बैठे । किन्तु कुछ समय [3¼]
बाद ही विक्षिप्त हो गये और असमय ही 1855 में / मृत्यु हो गई । यह घटना रानी के लिये वज्रघात के [3½]
समान थी । उनके दो बेटे थे अमानसिंह और / शेरसिंह । नाबालिग अमानसिंह की ओर से उत्तराधिकारी के [3¾]
रूप में रानी ने राज्य की कमान सम्भाली । किन्तु अंग्रेज // शासकों ने अमानसिंह को नाबालिग करार [4]
देकर रामगढ़ की रियासत 'कोर्ट ऑफ बोर्ड' से ले ली ।

एक सामन्त / के विश्वासघात के कारण जब गढ़ा के राजा शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथशाह [4¼]
को अंग्रेजों द्वारा तोप के मुंह में / बाँधकर उड़ा देने की खबर रानी अवन्ती बाई ने सुनी तो विद्रोह की आग [4½]
उनके अन्दर फूट पड़ी । सन् / 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में समूचे उत्तर भारत में क्रांति में [4¾]
शामिल होने का आव्हान करने के लिये, // कमल का फूल और रोटी भेजी गई थी । यह सन्देश रानी [5]
अवन्ती को मिला । रानी ने जागीरदारों / और मालगुजारों को एकत्रित करने के लिये अपने हाथ से [5¼]
लिखा कागज का पुर्ज़ा भिजवाया । संदेश यह था–/ ''कि देश के लिये लड़ो या चूड़ियां पहनकर बैठ [5½]
जाओ''

7

रानी ने एक बड़ी सैनिक टोली का नेतृत्व / कर मंडल से एक किलोमीटर पूर्व खैरी गाँव में मोर्चा [5¾]
जमाया । रानी की तलवार से अंग्रेज सेनापति वालिंगटन घायल // हुआ और भाग खड़ा हुआ । [6]

रानी ने मुट्ठीभर सैनिकों के साथ अलौकिक वीरता का परिचय दिया । उनके नेतृत्व / में वीरता और [6¼]
आजादी प्रेम के लिये क्षेत्रीय जनता ने तन मन धन से सहयोग दिया । अवन्तीबाई आजादी / के हवनकुंड [6½]
में अपनी आहुति देकर इसे तेजस्विता और ओजस्विता प्रदान कर अमर हो गई । आज़ादी की बलिबेदी
पर / जिन वीरों और वीरांगनाओं ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया वे अमर हो गये और एक इतिहास [6¾]
रच गये । // [7]

DO NOT WRITE ANYTHING HERE